Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 21/September/2023 IJRAW: 2023; 2(10):88-91 Accepted: 28/October/2023

किशनगढ़ (अजमेर) की चित्रकला एवं सांस्कृतिक धरोहर का पर्यटन उधोग में महत्व

[*1]हेमन्त धवल, [2]डॉ. राम स्वरूप साहू, [3]रतन लाल रणवां और [4]जगदीश प्रसाद

[*1]शोधार्थी, चित्रकला विभाग, राजस्थान विश्वविधालय, जयपुर, राजस्थान, भारत।

[2]प्राचार्य, राजकीय महाविधालय, कुचामन, मदस विश्वविधालय, अजमेर, राजस्थान, भारत।

[3]सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविधालय, कुचामन, राजस्थान, भारत।

[4]सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, राजकीय महाविधालय, कुचामन, राजस्थान, भारत।

सारांश

किशनगढ़ की चित्रकला प्राचीन समय से लेकर वर्तमान युग तक कई परिवर्तन हुए। कला तकनीक, कला के विषय, शैलियों आदि को लेकर निरंतर परिवर्तन जारी है तथा आगे भी जारी रहेगा। किशनगढ़ की कला के विभिन्न स्वरूप में विकास होते हुए भी इनकी वर्तमान स्थिति दयनीय है। सरकार को कला तथा कलाकारों को लेकर विचार करना चाहिये। कला के विभिन्न स्वरूप के विकास एवं उन्हें व्यापारिक उद्देश्य हेतु आवश्यक योजनाओ का संचालन करना चाहिये जिनसे बेरोजगारी की समस्या भी कुछ हद तक दूर की जा सके। कला बाजार का निर्माण, कला दीर्घा, एवं ऑनलाइन मार्केट तैयार करना चाहिये। पर्यटन के आकर्षण के महत्व को बढाने हेतु आवश्यक है की सरकार द्वारा किशनगढ़ के आशा टेकरी मंदिर, गुन्दोलाव झील, फुल महल, पीतांबर की गाल व डंपिंग यार्ड को आकर्षक रूप से तैयार करने हेतु बजट पास किया जाये। इन सभी क्षेत्रो के पास कला बाजार या कला दीर्घा भी खोली जाये जिस से पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र बने। फुल महल को पुनः सामान्य लोगो के लिए खोला जाये। इन जगहों मूवी शूटिंग के लिए एवं मनोरंजन के लिए पार्क खोले जाये। योग सेंटर, साइकिक सेंटर एवं संग्रहालय का विकास भी किया जाये जो दर्शको के आकर्षण का केंद्र बने।

मुख्य शब्द: कला-संपदा, डिजिटल आर्ट, कन्दरा, कवित्त, सवैयों, साइकिक सेंटर, कला बाजार व कला दीर्घा आदि।

प्रस्तावना

भारत की कला सम्पूर्ण संसार में प्रचलित व प्रसिद्ध है। कई हजार वर्षो पूर्व कंदराओ में जीवन व्यतीत करने वाले आदिमानव अपने मन के विचारो को चित्रों के माध्यम से व्यक्त करते तब से कला का आरंभ माना जाता है। आदिमकाल की बात को छोड़ दे तो हमारी कला-संपदा युगों से जगत में प्रतिष्ठित होती रही है। मध्य युग में दरबारी चित्रकला का दौर चला था और राजाओ के दरबार में चित्रकार हुआ करते थे। भगवान राम और कृष्णा के जीवन के विभिन्न पक्षों के चित्रण के आलावा राजाओ के लघु चित्र आज भी उपलब्ध है। किशनगढ़ राज्य में कला का पादुर्भाव ऐसे समय में ही हुआ। सावंत सिंह के समय चित्रकला का विकास हुआ। आज किशनगढ़ की कला कई नवीन आयामों को पा चुकी है। वर्तमान की चित्रकला को सरंक्षण एवं बाजार की आवश्यकता है। किशनगढ़ के बेरोजगार होते कलाकार को सरकार के संरक्षण की आवश्यकता है जिस विषय में आगे चर्चा की गयी है।

साहित्यावलोकन

डॉ. अविनाश पारीक ने अपनी पुस्तक "किशनगढ़ राज्य का इतिहास" में किशनगढ़ राज्य के कलात्मक, सांस्कृतिक व ऐतिहासिक विषयों पर प्रस्तुतीकरण दिया है। डॉ. अभिलाषा गोयल ने अपनी पुस्तक "किशनगढ़ की चित्रकला एक विवेचनात्मक अध्ययन" में किशनगढ़ की चित्रकला व चित्रकारों पर अध्ययन प्रस्तुत किया है। किशनगढ़ की लघु चित्रकला के विभिन्न विषयों व उनकी तकनीक पर विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। डॉ अविनाश पारीक ने अपनी "किशनगढ़ राज्य का इतिहास" में किशनगढ़ राज्य के कलात्मक, सांस्कृतिक व ऐतिहासिक विषयों पर प्रस्तुतीकरण दिया हैं। डॉ. अन्नपूर्णा शुक्ला ने भी अपनी पुस्तक "किशनगढ़ की चित्र शैली" किशनगढ़ की लघु चित्रकला का उदभव, विकास, प्रमुख चित्रकार, चित्र विषय तथा बणी-ठणी चित्र की विशेषताओ को प्रस्तुत किया हैं। डॉ. रीता प्रताप ने अपनी पुस्तक "भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला" का इतिहास में भारतीय चित्रकला व मूर्तिकला का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया हैं। इन सभी पुस्तकों

***Corresponding Author:** हेमन्त धवल

व महत्वपूर्ण लेखो की जानकारी इस शोध में उपयोगी रहे हैं। जगन्नाथ प्रसाद मिश्र द्वारा लिखित पुस्तक "किशनगढ़ राज्य और महाराजा सुमेर सिंह" में किशनगढ़ राज्य की राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक अवस्था को दर्शाते हुए किशनगढ़ के महाराजा सुमेर सिंह के जीवन पर विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है। डॉ. फैयाज अली खान द्वारा लिखित पुस्तक "The Kishangarh school of Indian Art True sense and sensibility" जिसमे किशनगढ़ की कला पर विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ फेशन एंड टेक्नोलोजी के शोधार्थियो द्वारा लिखित डॉक्युमेंट्री पुस्तक "Documentation of Minature Painting On Wood in Kishangarh, Rajasthan" में किशनगढ़ के लकड़ी से निर्मित्त उधोगों पर विवरण प्रस्तुत किया गया है।

परिकल्पना

प्रस्तुत शोधपत्र में परिकल्पना की गयी है कि किशनगढ़ की चित्रकला व हस्तकला की वास्तविक स्थिति दयनीय है जिस पर सरकार को ध्यान देना अतिआवश्यक है तथा कला को पर्यटन के आकर्षण का विषय बनाकर किशनगढ़ के पर्यटन स्थल के विकास पर ध्यान देना चाहिये। कालाकारो के मध्य फ़ैल रही बेरोजगारी के बादल गहरा रहे है जिनको सुलझाना आवश्यक है। कला के संरक्षण हेतु उचित उपाय करना भी अतिआवश्यक है। इन सभी विषयों पर विचार प्रस्तुत कियां गया।

शोध उद्देश्य

उपरोक्त शोध विषय में हमारे द्वारा 6 महीने का समय लेते हुए संपन्न किया गया। हमारे शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्न प्रकार से है-

- हमारे शोध का प्रमुख उद्देश्य कलाकारों की बढती बेरोजगारी के कारण स्पष्ट करना है।
- इस शोध द्वारा वर्तमान में किशनगढ़ की कला स्थिति पर प्रकाश डाला गया है।
- किशनगढ़ की हस्तकलाओ की स्थिति को स्पष्ट किया गया है।
- किशनगढ़ की पर्यटन से सम्बंधित स्थलों की स्थिति प्रकट की गयी है।
- कला व पर्यटन स्थलों की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है यह बात इस शोध से स्पष्ट करने की कोशिश की गयी है।

शोध-प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र में मुख्य रूप से व्याख्यात्मक एवं विवेचनात्मक शोध प्रविधि को प्रयोग में लाया गया है। शोध अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि, पुस्तक, मोनोग्राफ, डॉक्युमेंट्री, लघु-शोध, केटलोग, पेंटिंग आदि का शोध उपकरणों के रूप में प्रयोग किया गया है। सर्वेक्षण विधि हेतु कलाकारों द्वारा फॉर्म भरा गया जिसके माध्यम से संतोषप्रद उत्तर की प्रतिपुष्टि हो पायी है। कलाकारों की वास्तविक स्थिति परखने हेतु उनसे चर्चाये भी की गयी है।

किशनगढ़ चित्रकला का परिचय

किशनगढ़ राज्य की स्थापना के बाद महाराजा किशनसिंह के समय से ही लगभग 1658-1706 ईस्वी के मध्य किशनगढ़ राज्य में साहित्य व चित्रकला पर रचनाये होना शुरू हुई। [1] 1658-1706 ईस्वी के मध्य राजा मानसिंह व राजा रूपसिंह के समय में उल्लेखनीय कार्य होना प्रारंभ हुआ। सावंतसिंह ने मुग़ल कला की विशेषताओ के आधार पर किशनगढ़ चित्रकला का विकास किया। [2] सावंत सिंह द्वारा रचित पद, कवित्त एवं सवैयों आदि पर अनुपम चित्र बनवाये गए जिन्होंने किशनगढ़ की चित्रकला पर चार चाँद लगा दिए। [3] सावंत सिंह के समय में सुरध्वज निहालचंद ने 1735 से 1757 तक इनकी काव्य रचनाओ पर काम किया। [4] 1778 ई. में इन्होने विश्व प्रसिद्ध कृति राधा (बणी-ठणी) बनाया था। इस चित्र को बनाकर निहालचन्द ने किशनगढ़ नगर को सम्पूर्ण विश्व में पहचान दिलवायी। विश्व प्रसिद्ध चित्र बणी-ठणी ने किशनगढ़ के कला सौन्दर्य को विश्व स्तर की कलाओ में प्रतिष्ठित किया है। अमीरचंद, धन्ना, भंवरलाल, छोटू, सुरध्वज, मोरध्वज निहालचन्द व नानकराम आदि किशनगढ़ शैली के चित्रकारों ने कला को निरंतर विकास के पथ की तरफ अग्रसर किया है। [5] राधा-कृष्ण, नागर समुच्चयन, बारहमासा, गीत-गोविन्द, भागवत पुराण, वैभव विलास व राग-रागनियाँ आदि विषयों पर सुंदर चित्रण किया हैं। [6]

चित्र संख्या 1: झील से कमल चुनते कृष्ण

वर्तमान में कला की तकनीको में कई विविधताये नजर आती हैं। किशनगढ़ के समकालीन कलाकारो ने जल रंग, वाश, तेल रंग, पेस्टल रंग, पेन्सिल रंग, एक्रेलिक रंग व रंगीन पेन चित्रण आदि पद्धतियां के प्रयोग से चित्रों का सर्जन किया है। वर्तमान में कई प्रकार के रंग जैसे तेल रंग, जल रंग, टेम्परा रंग, एक्रेलिक रंग, पेस्टल रंग, चारकोल, स्याही आदि प्रयोग में लिये जा रहे हैं। मार्बल आर्ट ने भी कला तकनीक में एक बड़ा बदलाव किया है लेकिन ये कला महज व्यावसायिक तौर पर ही कार्यरत्त हैं। इसमे कला के भांति नवीनता नहीं बल्कि प्रतिकृति ज्यादा हैं।

विश्व प्रसिद्ध कृति बणी-ठणी (राधा)

इस पेंटिग का वर्तमान में प्रचलित नाम बणी-ठणी नहीं है और ना ही इस पेंटिग को बणी-ठणी को लेकर के बनाया गया हैं। इसके लिए ऐसा कहा जाता हैं कि नागरीदास को भाव में भगवत ज्ञान हुआ भावस्वरूप राधा के दर्शन हुए उसकी काव्य रूप में पिरोया। उसी काव्यरूप के आधार पर सूरध्वज निहालचन्द ये पेंटिंग बनाई अतः ये बणी-ठणी नहीं बल्कि राधा का स्वरूप हैं। 1778 ई. में इन्होने विश्व प्रसिद्ध चित्र राधा (बणी-ठणी) बनाया था। [7] बणी-ठणी (राधा) के नेत्र की पलके आधी झुकी हुई नीचे देखते हुए हैं। बड़े सुन्दर व आकर्षक नयनो का चित्रण किया गया हैं इस चित्र में। इनकी नजरे कृपामयी है जैसे की परमपिता परमात्मा के नेत्र हो। इनकी भौहें धनुष आकार की तनी हुई हैं। उभरा हुआ ललाट, लम्बी नासिका, पतले होट, नुकीली चिबुक, हल्के से गुलाबीपन लिए हुए कपोल, उभरे व कसे हुए वक्ष स्थाल, पतली सी कमर. सुडौल व उभरे हुए नितम्ब, गहरी कपोले आदि सौंदर्य पूर्ण लावण्य से युक्त है ये चित्र। राधा की ये कृति ना केवल किशनगढ़ अपितु सम्पूर्ण भारत की कला की पहचान है। बणी-ठणी (राधा) की कृति सौन्दर्य का एक अदभुत स्वरूप है जिसका प्रमाण एरिक्सन द्वारा राधा कृति की मोनोलिसा से तुलना हैं। बणी-ठणी (राधा) विश्व की अनमोल कृतियों में से एक है।

भारत सरकार ने बणी-ठणी (राधा) चित्र का 5 मई 1973 को एक डाक टिकट भी जारी किया जिसने पुरे संसार का ध्यान चित्रकला की और खींचा। एरिक डिकेन्सन ने बणी-ठणी (राधा) को राजस्थान की 'मोनोलिसा' कहा हैं। [8]

चित्र संख्या 2: बणी-ठणी (राधा)

Ever since Profesior E.C.Dickinson began a study of the Kishangarh Maharaja's collection of paintings I had the good fortune of working eith him. After I had read over to him scores of captions in Hindi and Persian on those paintings, he wanted to know the historical facts about them. In the meantime, having come upon the unique Radha painting in Kishangarh style, he thought of tracing its original. It is just possible in the field of rajput painting [9].

किशनगढ़ में कला की वर्तमान परिस्थिति एवं सुधार हेतु सुझाव

वर्तमान में किशनगढ़ विकास की ओर अग्रसर है निरंतर यहाँ पर सडकों, परिवहन, व्यापार तथा उधोग में वृद्धि हो रही है। लेकिन कला के क्षेत्र में सरकार द्वारा कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जा रहा है जबकि किशनगढ़ चित्रकला में अपनी विश्व स्तरीय पहचान रखता है। आवश्यक है की कला के क्षेत्र में सरकार द्वारा ध्यान दिया जाये तथा कला को व्यापारिक रूप में पनपने हेतु प्रयास करने चाहिये। सामान्य लोगो को भी कला की कदर करते हुए आगे आना चाहिये तथा इसके विकास हेतु उपाय सुझाये। छोटी साइज की बणी-ठणी (राधा) तथा अन्य किशनगढ़ शैली के साधारण कीमत वाले चित्रों को बेचने हेतु मार्केट उपलब्ध कराया जाना चाहिये तथा बड़े स्तर पर बनने वाली किशनगढ़ चित्र शैली के चित्रों की मार्केटिंग होनी चाहिये। इस हेतु सरकार तथा निजी संस्थानों द्वारा आर्ट गैलेरी को विकसित करना चाहिये। दुर्भाग्य की बात है की इतने वर्षो से किशनगढ़ में कला के सरंक्षण हेतु किसी भी प्रकार के संग्रहालय को स्थापित नहीं किया हालाँकि कृष्णा आर्ट गैलेरी का कुछ समय तक वर्चस्व था लेकिन अब वह भी बीते समय के साथ विलीन हो चुकी है। कलाकारों का सरंक्षण ही कला का सरंक्षण है। सरकार को कलाकारों के सरंक्षण हेतु आवश्यक योजनाओं को चलाना चाहिये। कलाकारों को भी एक वर्ग बनाना चाहिये जिससे वों अपनी मांग सरकार तक पंहुचा सके एवं स्वयं भी निजी स्तर पर कला के विकास हेतु प्रयासरत रहना चाहिये। परम्परागत कला के संरक्षण हेतु प्रयास तो होने ही चाहिये किन्तु आधुनिक कला के मॉडर्न कलाकारों तथा उनकी कला के संरक्षण होना आवश्यक है। किशनगढ़ पुनः कला की नगरी बन सकता है लेकिन आवश्यक है की इस हेतु एक बड़ी कला दीर्घा, बड़ा कला मार्केट बनाना चाहिये। इसी क्रम में कुटीर उधोग के विकास पर भी विचार करना चाहिये। किशनगढ़ मार्बल की नगरी है अतः यहाँ मार्बल से सम्बंधित सुन्दर एवं आकर्षक वस्तुये कालकारो द्वारा विनिर्मित की जाती है। यह सभी आकर्षक वस्तुए दर्शकों के मन लुभाती है। अंततः हम ये कह सकते है की विभिन्न कलाओं के कलाकारों के संरक्षण हेतु सरकार द्वारा ध्यान दिया जाये तथा विभिन्न कलाओं को बाजार में बेचने हेतु कला दीर्घा, कला बाजार एवं ऑनलाइन मार्किट फिल्ड तैयार करना चाहिये। किशनगढ़ की सभी कलाये आज भी पर्यटकों को आकर्षित करती है। यह कलाये राज्य की आय को बढाने में बहुत हेतू सहायक हो सकती है। यह योजनाये कलाकारों एवं कारीगरों में उत्पन्न बेरोजगारी की समस्या को भी बहुत हद तक सुलझा सकती है। आशा टेकरी मंदिर, गुन्दोलाव झील, फुल महल, पीताम्बर की गाल व डंपिंग यार्ड जैसे आकर्षण के केन्द्रों के पास भी कला बाजार या कला दीर्घाओ का विकास किया जाये जिस से पर्यटको को किशनगढ़ की विभिन्न प्रकार की कला से परिचित होने का अवसर मिले। कला संपदा का संरक्षण व कला संपदा का उचित प्रयोग राज्य के महत्व को बढाती है।

किशनगढ़ पर्यटन को आकर्षित करने हेतु आवश्यक सुझाव

किशनगढ़ में पर्यटकों का रुझान बढ़ रहा है लेकिन यह कुछ चुनिन्दा पर्यटन स्थल जैसे डंपिंग यार्ड, फुल महल के कारण बढ़ रहा है। हालाँकि अजमेर जैसे पर्यटन स्थल का निकट होने के कारण किशनगढ़ में विदेशी एवं देशी पर्यटकों का आकर्षण हो रहा है लेकिन आवश्यक है की इस हेतु हम किशनगढ़ को आकर्षण का केंद्र बनाये। फुल महल जो की पहले पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र था, यहाँ फिल्मो की शूटिंग भी होती थी लेकिन अब इसे होटल बना दिया गया है जिस से पर्यटकों का आकर्षण कम हुआ है।

Phool Mahal: The Phool mahal built in 1870 Located within the boundaries of Kishangarh has served as a royal place for the Rathore maharaja, it is also known as flower Place. It present an impeccable example of the opulence and splendour of the lifestyle of the Rathore Rajput of those days, The fort also displays some incredible miniature painting of the 18th century [10].

चित्र संख्या 3: फुल महल किशनगढ़

सरकार को इस तरफ ध्यान देना चाहिये कि फुल महल को पुनः पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बनाना चाहिये। डंपिंग यार्ड को आकर्षक बनाने का प्रयास किया जाये। कला के विकास को लेकर हम पहले ही चर्चा कर चुके तो इनके सरंक्षण हेतु कार्य करे, कला बाजार खोले जाये, कला मेले लगाये जाये, कला दीर्घा एव कला संग्रहालय की स्थापना की जाये जो पर्यटकों के आकर्षण को बढ़ाएगी। किशनगढ़ में पर्यटकों के आकर्षण को हेतु योग सेंटर, साइकेटिक सेंटर की स्थापना करे। शूटिंग पार्क एवं मनोरंजन पार्क के निर्माण हेतु विचार किया जाना चाहिये। पीताम्बर की गाल, आशा

टेकरी मंदिर व डंपिंग यार्ड जैसे स्थलों के विकास हेतु बजट पास हो जिससे इनके आकर्षण पर कार्य किया जा सके। किशनगढ़ के सामान्य नागरिको को अपनी सांस्कृतिक धरोहर तथा पर्यटन स्थलों के विकास एवं सरंक्षण हेतु सरकार का सहयोग करना चाहिये। शहर के नामचीन एवं अमीर वर्ग को शहर के विकास हेतु आगे आना चाहिये। सामान्य नागरिको को भी अपने शहर के विकास हेतु प्रति वर्ष आय सिंचित करते हुए कोष में संगृहीत करना चाहिए। सभी कार्य सरकार के प्रयासों से संपन्न नहीं होगे इस हेतु हम सभी को आगे बढ़कर प्रयास करना चाहिये।

सरकार द्वारा वर्तमान में कलाकारों के लिए जारी योजनाओ के प्रभाव हेतु सर्वेक्षण

हमारे द्वारा एक सर्वेक्षण सम्पन्न किया गया जिसमे 25 कलाकारों के समूह से सर्वेक्षण के आधार पर किशनगढ़ के कलाकारों पर सरकार की योजनाओ का प्रभाव जानने का प्रयास किया गया। इस सर्वेक्षण में किशनगढ़ के कलाकारों 25 कलाकारों को चुना गया तथा कुछ प्रश्न वाले फॉर्म भरवाए गए। इस सर्वे के आधार पर हमने निम्न सारणी प्रस्तुत की है-

तालिका 1: सरकार द्वारा वर्तमान में कलाकारों के लिए जारी योजनाओ के प्रभाव हेतु सर्वेक्षण सारणी

क्र.सं.	प्रश्न	सहमत	असहमत
01	किशनगढ़ में कलाकारों को सरकारी योजनाओ के फायदे मिले या नहीं?	03 सहमत। कलाकार को सरकारी योजनाओ के फायदे मिले।	22 कलाकार असहमत। हमें सरकार की ऐसी किसी भी योजना का लाभ नहीं मिला। सूचनाओ का अभाव या प्रक्रिया समझ नहीं आयी। कुछ कलाकार ऐसी किसी भी योजना को लेने के इच्छुक नहीं है।
02	क्या किशनगढ़ में कला अकादमी, कला संग्रहालय खोले जाने की आवश्यकता है?	24 सहमत। बिलकुल आवश्यकता है इस से कई कलाकारों को संबल मिलेगा।	01 कलाकार असहमत। निजी कला से ही अच्छा काम हो रहा है।
03	प्राचीन व वर्तमान कलाओ के संरक्षण की आवश्यकता है या नहीं?	25 सहमत। संरक्षण की बहुत आवश्यकता है।	00 असहमत।
04	किशनगढ़ में प्रसिद्ध पर्यटन स्थल के निकट कला बाजार तथा कला दीर्घा खुलने से कलाकारों को फायदा होगा या नहीं?	25 सहमत। यदि ऐसा होता है तो कई कलाकारों को रोजगार मिलने की सम्भावना बढ़ेगी तथा कला का महत्व भी बढेगा।	00 असहमत।
05	किशनगढ़ में पर्यटन स्थल के विकास हेतु सरकार की वर्तमान योजनाये सक्षम है या नहीं।	15 सहमत। सरकार की योजनाये सक्षम है तथा वर्तमान बहुत विकास का कार्य भी हो रहा है जो पर्यटन को बढ़ावा देगा।	10 असहमत। इतनी योजनाये नाकाफी है। सरकार बस अपने प्रभुत्व के लिए काम कर रही है जबकि वास्तव में पर्यटन को ध्यान रखते हुए काम करना है तो एक बड़ा बजट पास करना होगा। जिस से वास्तव में पर्यटन के आकर्षण का मुख्या केंद्र बनकर किशनगढ़ उभरे।

निष्कर्ष

इस शोध पेपर में हमने 6 महीने का अध्यन करते हुए किशनगढ़ के कला एवं पर्यटन पर अध्ययन प्रस्तुत किया है। पर्यटन के विकास में कला के महत्व को स्पष्ट करते हुए पर्यटन स्थल के विकास एवं पर्यटन के स्त्रोतों को बढ़ाने पर विचार किया गया है। अगर हमारे द्वारा प्रस्तुत शोध समस्या एवं उपायों पर गौर किया जाये तो हम युवाओ में बढ़ रही बेरोजगारी, पर्यटकों के कम होते रुझान के स्तर को सही कर सकते है। हमने बहुत से लोगो से फॉर्म भरवाए तथा प्रश्न रखे जिसका निष्कर्ष निकला है की हमें कलाकारों का विकास, कला दीर्घाओ का विकास, कला बाजार व कला मेलो का आयोजन, पर्यटन स्थल का विकास, हस्त कला का विकास, फुल महल को पुनः पर्यटकों हेतु खोलना, अवैध कब्जो को कम करते हए कला बाजार का विकास करने पर गौर किया जाना चाहिये। यह पर्यटन को बढ़ावा देगा तथा राजस्व आय की वृद्धि में भी सहायक होगा। पर्यटन के आकर्षण के महत्व को बढाने हेतु आवश्यक है की सरकार द्वारा किशनगढ़ के आशा टेकरी मंदिर, गुन्दोलाव झील, फुल महल, पीतांबर की गाल व डंपिंग यार्ड को आकर्षक रूप से तैयार करने हेतु बजट पास किया जाये। इन सभी क्षेत्रो के पास कला बाजार या कला दीर्घा भी खोली जाये जिस से पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र बने। फुल महल को पुनः सामान्य लोगो के लिए खोला जाये तथा दर्शको के आकर्षण का केंद्र बनाया जाये। इन जगहों मूवी शूटिंग के लिए एवं मनोरंजन के लिए पार्क खोले जाये।

संदर्भ

1. गोयल डॉ. अभिलाषा-किशनगढ़ चित्रकला एक विवेचनात्मक अध्ययन, नवजीवन पब्लिकेशन, टोंक, 2006, पृ.सं.-164
2. गोयल डॉ. अभिलाषा-किशनगढ़ चित्रकला एक विवेचनात्मक अध्ययन, नवजीवन पब्लिकेशन, टोंक, 2006, पृ.सं.-162
3. मिश्र, जगन्नाथ प्रसाद-किशनगढ़ राज्य और महाराजा सुमेर सिंह, संजय प्रकाशन, प्रेम नगर, पृ.सं.-34
4. शुक्ला, डॉ. अन्नपूर्णा-किशनगढ़ चित्र शैली, कोटवाल ऑफसेट, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2015, पृ.सं.-23
5. प्रताप, डॉ. रीता-भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2015, पृ.सं-207
6. पारीक, डॉ. अविनाश-किशनगढ़ का इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2014, पृ.सं.-171
7. सिंह, सांवल-किशनगढ़ चित्रशैली के समसामयिक प्रतिनिधि चित्रकार श्री शहजाद अली शेरानी का व्यक्तित्व और कृतित्व : एक अध्ययन, अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, महर्षि दयानान्द सरस्वती विश्वविधालय, अजमेर, सत्र 2009, पृ.सं.-26
8. शुक्ला, डॉ. अन्नपूर्णा-किशनगढ़ चित्र शैली, कोटवाल ऑफसेट, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2015, पृ.सं.-67
9. Khan, Do. Faiyaj ali-The Kishangarh school of Indian Art True sense and sensibility, Universal Pilgrim Production, First Edition, 2020, पृ.सं.-96,
10. Documentation of Minature Painting On Wood in Kishangarh, Rajasthan, This document has been written designed, illustrated, photographed by student researchers, National Institute of Fashion Technology, New Delhi, Department of Design space M.Des (2016-18), पृ.सं.-8,